लोकविद्या कला समागम इंदौर

(प्रस्तावित दिनांक 1 - 2 जुलाई 2023)

गाँधी, गिरीश (23 मई 2023)

आज भारतीय समाज एक चिंताजनक दौर से गुजर रहा है। समाज की स्वायत्तता, स्वयंस्फूर्तता, गतिशीलता लगभग खत्म हो गयी है। समाज और उसकी गतिविधियों पर सत्ता और सरकार हावी हो गये हैं। हालांकि इसकी शुरुआत अंग्रेज़ी हुकूमत के समय हो चुकी थी, आज़ादी की लड़ाई में ऐसा लगा था कि सत्ता और सरकार के आधिपत्य से समाज कुछ हद तक मुक्त हो सकेगा। सत्ता समाज में लौट सकेगी। समाज की स्वयंस्फूर्त गतिशीलता जागेगी। समाज स्वायत्तता की दिशा में आगे बढेगा। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। सत्ता और सरकार का अमल समाज पर आज़ादी के बाद भी बना रहा। स्वराज आधारित समाज का सपना धूमिल हुआ।

खासकर विगत कुछ वर्षों से यह प्रक्रिया और भी तेज हो गयी है। समाज कई टुकड़ों में बंट रहा है। सत्ता की होड़ और सत्ता केंद्रीकरण के चलते राजनीति विघटनकारी हो गयी है। हिंसा और नफरत का वातावरण सबको अपनी गिरफ्त में ले रहा है। आम लोगों में निराशा का वातावरण छा गया है। ऐसे समय समाज को बिखरने से रोककर, उसमें वैचारिक और भावनात्मक एकजुटता स्थापित करना हम सब का धर्म है। न्याय और समता का अमल कायम हो इस मंशा से नए समाज के बारे में सोचना हमारा दायित्व है। इसमें कला की अहम भूमिका है।

लोकविद्या संपन्न बहुजन समाज (किसान-कारीगर-महिलाएं-आदिवासी-छोटे व्यापारी व उद्यमी) के बीच वैचारिक व भावनात्मक स्तरों पर भाईचारा स्थापित करने में संतोंने अहम भूमिका निभाई है। संत वचनों को बहुजन के बीच फैलाने और बनाए रखने में लोक-कलाकारों का योगदान निर्णायक रहा है। न केवल लोक-कलाकार, बल्कि कवि, साहित्यकार और शास्त्रीय कला साधकों की सामाजिक चेतना का प्रेरणा-स्रोत भी संत-परम्परा ही है।

1 - 2 जुलाई 2023 का कला-समागम निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ प्रस्तावित है:

1. मालवा-निमाड़ अंचल की संत-परम्पराओं से जुड़े ज्ञानी, कलाकार और कलाप्रेमियों को एक मंच पर लाना।
2. इंदौर शहर और आसपास के युवा कला साधकों को एक मंच प्रदान करना।
3. सामाजिक विघटन, नफरत, हिंसा से मुक्ति व आपसी भाईचारे की स्थापना कैसे हो? समाज की लुप्तप्राय स्वयंस्फूर्तता, गतिशीलता, स्वयंचालिता और स्वायत्तता लौटाने का कलामार्ग क्या हो? सत्ता को समाज पर हावी होने से कैसे रोकें? संत-परम्परा से प्रेरणा लेते हुए इन सवालों के हल में कलाकारों और कलाप्रेमियों की दखल क्या हो, इस पर विचार करना। इसपर अमल हेतु एक दीर्घकालीन कार्यक्रम तय करना।

4. ज्ञान-क्षेत्र में लोकविद्या के लिए बराबरी का दावा तथा स्वराज, स्व-शासन, स्वयंचालन, समाज में वितरित सत्ता जैसी अवधारणाओं और सम्भावनाओं को दर्शाती कला-कृतियाँ प्रस्तुत करना।